स्त्रियों के गीतों में स्त्री

(संदर्भ-कुमाऊनी लोक गीत)

– अनिल कुमार कार्की

ओ लिल, है गोछौ गरू
ना रे, मणि आजि,
सकन गढव नि भय ओ दी!

भाव इस तरह है- ओ लीला, हो गया बोझ? नहीं दी, थोड़ा और। अभी सामर्थ्य भर बोझ नहीं हुआ दीदी।

ये उन्हीं घस्यार (घास काटने वाली) महिलाओं की दैनिक जीवन की बातचीत है जिनके गीतों की हम यहाँ चर्चा करने जा रहे हैं। दैनिक जीवन में पहाड़ों की ऊँचाई पर चढ़ते-उतरते हुए ये महिलाएँ जंगलों के बीच अपने होने, मिटने, बनने के बोल रख आती है। यही बोल घाटियों और पहाड़ों से टकराकर गीत में बदल जाते है। "तिलै धारू बोला" यानि कि तूने इन पहाड़ों पर अपने बोल रखे, वचन दिए। यहाँ के कुछ गीतों की टेक में "तिलै धारू बोला" इसीलिए कहा जाता है। ये वही गीत हैं जिनमें एक नयी पंक्ति जोड़ने, साथ गुनगुनाने, साथ में नृत्य करने से पहाड़ी महिलाओं का बेढब जीवन थोड़ा आसान हो जाता है। सामर्थ्य भर बोझ उठाने का उनका अदम्य साहस बना रहता है।

रूढ़िक्या खेत तुड़क्या पानि रूमाल भिजूंलो
ऊँच डाणो निसो ह्वे जा मैं ईजु देखूंलो।

एक पहाड़ी महिला जेठ में सूख चुके टप-टप गिरते पानी के बूँदों में एहसासों के रूमाल भिगाने की कोशिश में है। महिला विशालकाय

पहाड़ से कहती है, "अरे ओ पहाड़ थोड़ा झुक जा तुम्हारे दूसरी तरफ जो मेरी माँ रहती है मुझे अपनी माँ की याद आ रही है। मैं उन्हे देखना चाहती हूँ। निष्ठुर पहाड़ कहाँ यह समझ सकने में समर्थ है?

कुमाऊँनी समाज में तीन ऋतु होती है चौमास यानि बरसात, ह्यून यानि शीत, रूड़ यानि कि गर्मी की ऋतु तीनों ही ऋतुओं में महिलाओं के अलग-अलग गीत देखने को मिलते हैं। पहाड़ों को लेकर बहुत से फैंटेसी भरे नरेटिव देखने-सुनने-पढ़ने को मिलते हैं। दरअसल वह सारे आमजन के पहाड़ से एक भिन्न अभिजातीय पहाड़ है। पहाड़ में लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व तथाकथित सभ्य जातियों द्वारा दलित कही जाने वाली जातियां और स्त्रियां ही करती हैं। इनके मूल गायक भी यही हैं। यही पहाड़ का सबसे मेहनती तबका भी है। इन गीतों में इनके सुख-दुख और संघर्ष सहज ही देखे जा सकते हैं।

फुला सरसेऊ माया रे पिंगली छै रे केश
आज छोड़ी जांछू ईजू रे मैतुरा को रे देश
कै डाना है देखंलि ईजु मै मैतुरा को रे देश
कै धुरा है देखुंली बूबा मै मैतुरा का देश
हेरी आँल फेरि आँल मै मैतुरा को देश

परन्तु यह भी सत्य ही है पहाड़ी अभिजन लोक संग्रहकर्ताओं द्वारा महिमामण्डित कुमाऊँनी और गढ़वाली दोनों ही समाजों में जाति और लिंग की असमानता भले ही सुन्दर रमणीक पहाड़ों बुग्यालों ओर घाटियों के सौन्दर्य में दिखाई न देती हो पर दूर-दराज के पहाड़ आज भी इससे ग्रसित हैं। इनके सारे अनुभव भी यहां के लोकगीतों में जुड़ते चले गये हैं। अभिजन नायिकाएं और निचली समझी जाने वाली जातियों में दर्जियों, ग्वालों के साथ प्रेम प्रंसग के लोक गीत गाहे-बगाहे सुनने और चांचरी जोड़ों में देखने को मिल जाते है।

मुनिया टेलर मुनिया
गोपुली बामणी
या
भागा वे पंत्याण भागा छुम छुमा

उपरोक्त चांचरी (लोक गायन की एक शैली) की टेक में एक टेलर के साथ गोपुली नाम की ब्राह्मण महिला के स्वच्छंद मिलन का जिक्र आता है। इसी तरह 'भागा' नाम की ब्राह्मण कन्या पर भी गीत मिल जाता है लेकिन गैर ब्राह्मण महिलाओं में अपेक्षाकृत ज्यादा मांसल गीत मिलते है। कई लोगों का मानना है कि लोक संस्कृति एक जड़ व रूढ़ चीज है परन्तु यह संस्कृति को देखने का एक ही पहलू हो सकता है। "लोक संस्कृति अपनी वाचिक परम्परा में स्थितिशील न होकर गतिशील है। हर पीढ़ी अपनी थाती में अपने समय के अनुभवों को किसी न किसी रूप में जोड़ती चलती है।